मृच्छकटिक

सूक्ति - गुणः खलु अनुरागस्य कारणम् न पुनर्बलात्कारः।

सन्दर्भ: प्रस्तुत सूक्ति मृच्छकटिक के प्रथम अंक से उद्धृत है।

प्रसंग : विट तरह-तरह से वसन्तसेना को समझाकर शकार की ओर उन्मुख करना चाहता है। वह उसे मार्ग में उत्पन्न हुई लता के समान तथा बाजार में ~~बेची~~ बेची जाने वाली वस्तु के समान बतलाता है। लता को कोई भी स्पर्श कर लेता है तथा बाजार में ~~बेची जाने~~ बेची जाने वाली वस्तु को कोई भी खरीद लेता है। मयूर (मोर) के द्वारा बैठकर झुकाई गई लता को उस पर बैठकर कौवा भी झुका देता है। विट के समझाने का अभिप्राय है कि तुम (वसन्तसेना) सभी के लिए एक जैसी है। परन्तु वसन्तसेना किसी भी तरह शकार के वश में नहीं आती।

~~प्रेम केवल~~ इस सूक्ति में वसन्तसेना द्वारा गुण को ही प्रेम का कारण बतलाया गया है।

Scanned with CamScanner

अनुवाद : (वसन्तसेना कहती है कि) निश्चित रूप से गुण ही अनुराग (प्रेम) का कारण है, न कि बलात्कार।

व्याख्या : प्रस्तुत सूक्ति में वसन्तसेना मित्र से कहती है कि गुण ही प्रेम का कारण होता है, न कि बलात्कार। चारुदत्त गुणी है, उनके गुणों के कारण ही वह निर्लोभ भाव से उनसे प्रेम करती है। चारुदत्त वसन्तसेना को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कोई उपाय या प्रयास नहीं करते। वसन्तसेना स्वयं उनके गुणों से प्रभावित होकर उनसे निर्लोभ प्रेम करती है। शकार मूर्ख एवं गुणहीन है। अहंकारी है। वह वसन्तसेना को पाने के लिए हर तरह प्रयास करता है और दबाव भी बनाता है। उसे पाने के लिए लालच भी देता है, तथापि वसन्तसेना शकार को ठुकरा देती है। चारुदत्त के धनहीन होने पर भी गुणी होने के कारण उनसे प्रेम करती है इसीलिए कहा गया है कि गुण ही प्रेम का कारण होता है। बलपूर्वक प्रेम नहीं होता है।

Scanned with CamScanner